eISSN 3139-2377
RESEARCH WORK
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed International Research Journal
Volume 02, Issue 03, March 2026

विकसित भारत @ 2047 तथा मानव विकास

वीरेन्द्र कुमार[1]
[1]असिस्टेन्ट प्रोफेसर–अर्थशास्त्र, काशी नरेश रा0 स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ज्ञानपुर भदोही उ0प्र0

Received: 20 March 2026 Accepted & Reviewed: 25 March 2026, Published: 31 March 2026

Abstract

दुनिया का सबसे बड़ा लोकतान्त्रिक तथा विशाल जनसंख्या वाला देश एवं तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक होने के नाते विकसित भारत @ 2047 का औपचारिक शुम्भारंभ एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। विकसित भारत @ 2047 का विजन भारत की अपनी आजादी की सौवी सालीगरह तक पूरी तरह से विकसित राष्ट्र बनने की इच्छा को दिखाता है। इसके केन्द्र में नवाचार समवेशी विकास मानव विकास तथा सतत् विकास है यह रिसर्च पेपर विभिन्न आर्थिक पहलुओं तथा विश्लेषण के जरिए मानव विकास से जुड़े बाह्य तथा आतंरिक ढांचे को बनाने में भारत की भूमिका की जांच करता है। यह अध्ययन उन घरेलू सुधारों पर भी प्रकाश डालता है, जिन्हें भारत को अपने राष्ट्रीय विकास एजेंडे को अर्न्तराष्ट्रीय मानव विकास फ्रेमवर्क के साथ समतुल्य करने के लिए करना चाहिए। निष्कर्ष इस बात पर जोर देता है कि भारत की नेतृत्व की क्षमता, अर्न्तराष्ट्रीय मापदण्डों पर आधारित राष्ट्रीय विकास की प्राथमिकताओं को शामिल करते हुए नवाचार के साथ मानव विकास तथा समावेशी विकस के मार्ग पर आगे कैसे बढ़ा जाय।

मुख्य शब्द:– लोकतंत्र, सतत् विकास, समावेशी विकास, मानव विकास, पूंजी स्टॉक, जनसांख्यिकी लाभांश, सम्पोषणीय नीतियां।

Introduction

दुनिया का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक तथा जनसंख्या वाला देश एवं तेजी से बढ़ती अर्भव्यवस्थाओं में से एक होने के नाते विकसित भारत @ 2047 का औपचारिक शुम्भारंभ एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। विकसित भारत 2047 के मुख्य स्तम्भ युवा, गरीब महिलाएं और अन्नदाता (किसान) है, जो समावेशी विकास के केन्द्र में है, साथ ही इसमें आर्थिक विकास (विनिर्माण, निवेश, प्रौद्योगिकी) सामाजिक सशक्तिकरण, पर्यावरण स्थिरता, मानव विकास तथा सुशासन जैसे व्यापक क्षेत्र भी शामिल है, ताकि 2047 तक भारत को एक पूर्ण विकसित राष्ट्र बनाया जा सके। विकसित भारत 2047 भारत सरकार का एक विजन है, जिसके तहत स्वतंत्रता की 100वीं वर्ष गांठ के उपलक्ष्य में 2047 तक देश को एक विकसित राष्ट्र में परिवर्तित करना है। इसका उद्देश्य महज दो दशकों में भारत की अर्थव्यवस्था को 30 ट्रिलियन डॉलर तक पहुंचाना है। यह समावेशी विकास, नवाचार, स्थिरता और सुशासन पर केन्द्रित है, जिसका उद्देश्य समाज के हर वर्ग की समृद्धि सुनिश्चित करना है। विकसित भारत सभी नागरिको के लिए, सबको साथ लेकर चलने वाले विकास और बेहतर जीवन को पक्का करने के लिए जरूरी सामाजिक विकास के लक्ष्यों को पाने पर बहुत जोर देता है।

अध्ययन के उद्देश्य:–

- विकसित भारत @ 2047 विजन की अवधारणा को स्पष्ट करना।

eISSN 3139-2377
RESEARCH WORK
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed International Research Journal
Volume 02, Issue 03, March 2026

- विकसित भारत @ 2047 विजन तथा मानव विकास के बीच सम्बन्ध।
- विकसित भारत @ 2047 विजन में आने वाली बाधाओं का विश्लेषण करना।

अध्ययन की प्रविधिः– इस अध्ययन के लिए द्वितीयक स्त्रोतो के माध्यम से जैसे पुस्तकों, समाचार पत्रों, जर्नलों, प्रकाशित पत्र–पत्रिकाओं तथा विभिन्न वेबसाइयों के माध्यम से एकत्रित किए गए है। यह अध्ययन पूर्णतः वर्णनात्मक एवं व्याख्यात्मक है।

विश्लेषणः–

आर्थिक विकास V/s मानव विकासः– आर्थिक विकास की प्रक्रिया में भौतिक पूंजी संचय के बजाय वर्तमान में पूंजी स्टॉक की वृद्धि को अधिक महत्व दिया जाने लगा है। जो पूर्णतः मानव संसाधन विकास पर निर्भर करता है। मानव संसाधन विकास देश के निवासियों को आय कुशलता एवं क्षमता बढ़ाने की एक प्रक्रिया है। आर्थर लुइस का कहना है कि ''आर्थिक विकास मानवीय प्रयत्नों का परिणाम है।''

किसी देश का आर्थिक विकास उस देश में उपलब्ध मानव पूंजी के स्टॉक तथा संचय की दर निर्भर करता है। विकासशील देशों में नियोजित आर्थिक विकास की प्रक्रिया में मानव के विकास पर समुचित ध्यान नहीं दिया जाता, यही कारण है कि इन देशों में विकास के वांछित लक्ष्य प्राप्त नहीं हो पाते। आज अधिकांश विकासवादी अर्थशास्त्री इस बात के पक्षधर है कि मानव पूंजी में अधिक से अधिक विनियोग किया जाना चाहिए ताकि आर्थिक विकास के सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटक मानव संसाधन का समुचित विकास किया जा सके। किसी भी देश की जनसंख्या का जितना अधिक हिस्सा शिक्षित कुशल एवं प्रशिक्षित होकर रोजगार में लगा हुआ है, वह देश उतना ही तेजी से विकास करेगा। प्रसिड़ अर्थशास्त्री मार्शल का विचार है कि ''सबसे मूल्यवान पूंजी वह है जो मानव मात्र में विनियोजित की जाये।'' विकास योजना बनाने का मुख्य उद्देश्य मानव विकास तथा लोगों द्वारा जीवन यापन का उच्चतर स्तर हासिल करना है। इसके लिए गरीबो, हाशिए पर रह रहे लोगों को विकास के लाभों और अवसरों के अधिक समान वितरण और बेहतर रहन–सहन के वातावरण और सशक्तिकरण की जरूरत है। महिलाएं जो कि परिवर्तन हेतु उत्प्रेरक का कार्य कर सकती है, को सशक्त करने की विशेष आवश्यकता है। विकास प्रक्रिया को समावेशी बनाने हेतु क्षेत्रीय, सामाजिक तथा आर्थिक विषमताओं को पाटने हेतु प्रभावी तथा सम्पोषणीय नीतियां तथा कार्यक्रम बनाना एक चुनौती है।

मानव विकास तथा भारतः– भारत अप्रत्याशित जनसांख्यिकी परिवर्तनों के चरण में गुजर रहा है। इन जनसांख्यिकी परिवर्तनों से देश में प्रचुर–वृद्धिकारी श्रमिक बल के योगदान की सम्भावना है। यह जनसांख्यिकी लाभ विश्व में किसी अन्य देश की तुलना में भारत को बेहतर अवसर प्रदान करता है। यह भारत के लिए तभी लाभकारी होगा यदि हमारे लोग स्वास्थ्य, शिक्षित, और समुचित रूप से कुशल हो। इसलिए जनसांख्यिकी लाभांश के सर्वोत्तम प्रयोग के लिए मानव और समावेशी विकास पर अधिक ध्यान देना आवश्यक है। संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम द्वारा प्रकाशित मानव विकास रिपोर्ट में तीन बुनियाद सामर्थ्यो अर्थात् लम्बा व स्वस्थ्य जीवन हो, शिक्षित और जानकर हो तथा रहन–सहन के शानदार आर्थिक स्तर का आनन्द लेने के संदर्भ में मानव विकास सूचकांक में अनुमान लगाए गए है।

eISSN 3139-2377
RESEARCH WORK
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed International Research Journal
Volume 02, Issue 03, March 2026

संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) की वर्ष 2025 की मानव विकास रिपोर्ट, इस वर्ष मानव विकास की वैश्विक गति मे गिरावट की ओर संकेत करती है, खास तौर पर दक्षिण एशिया में यह गिरावट अधिक स्पष्ट है, लेकिन भारत इस क्षेत्र में एक अपवाद बनकर उभरा है–जहां मानव विकास के संकेतको में निरन्तर प्रगति देखी गई है। भारत ने न केवल स्वास्थ्य शिक्षा और आय के क्षेत्रों में उल्लेखनीय सुधार दर्ज किए है, बल्कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता के जरिए समावेशी और स्थाई विकास का मार्ग भी प्रशस्त किया है।।

"A matter of choice: people and possibilities in the age of AI" नामक मानव विकास रिपोर्ट के अनुसार, भारत का मानव विकास सूचकांक (HDI) 2022 में 0.676 से बढ़कर 2023 में 0.685 हो गया है। इसके साथ भारत, 193 देशों में एक वर्ष में 133वें स्थान से आने बढ़कर 130वें स्थान पर पहुंच गया है।

साथ ही भारत मध्यय मानव विकास श्रेणी में जगह बरकरार रखते हुए, उच्च मानव विकास (HDI>0.700) की सीमा के करीब पहुंच रहा हैं। 1990 के बाद से भारत के HDI मूल्य में 53% की वृद्धि गई है जो वैश्विक और दक्षिण एशियाई औसत से तेज है। यूएनडीपी की भारत में प्रतिनिधि एंजेला लुसिगी के अनुसार यह प्रगति शिक्षा के औसत वर्षों, जीवन प्रत्याशा और प्रति व्यक्ति राष्ट्रीय आय में स्थाई सुधार हो दर्शाती है।

मानव विकास रिपोर्ट 2025 में भारत को एक उभरती हुई AI शक्ति के रूप में पहचाना गया है। भारत, वैश्विक AI सूचकांक में शीर्ष 10वें स्थान पाने वाला एक मात्र निम्न मध्यम आय वाला देश है। रिपोर्ट के अनुसार भारत में AI से सम्बन्धित बुनियादी ढांचा मजबूत है और कौशल विकास के क्षेत्र में निरन्तर निवेश हो रहा है। वर्ष 2019 में जहां AI शोधकर्ताओं की संख्या लगभग नागण्य थी, वही अब 20% भारतीय लोग AI शोधकर्ता देश में ही कार्यरत है। भारत में AI का उपयोग विभिन्न क्षेत्रों में किया जा रहा है–जैसे कि कृषि, स्वास्थ्य सेवा और सार्वजनिक वितरण प्रणाली।

स्वास्थ्य शिक्षा और आय में निरन्तर सुधार:– 1990 में भारत में जीवन प्रत्याणा 58.6 वर्ष थी, जो अब बढ़कर 2023 में 72 वर्ष हो गई है, जो कि HDI सूचकांक की शुरूआत से लेकर अब तक का सबसे उच्चतम स्तर है। शिक्षा के क्षेत्र में भी सुधार हुआ है अब भारत में बच्चो को स्कूल में बने रहने की औसत अवधि 13 वर्ष तक पहुंच गई है जबकि 1990 में यह केवल 8.2 वर्ष थी। शिक्षा के अधिकार अधिनियम समग्र शिक्षा अभियान और नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 जैसे कदमों ने इसमें उल्लेखीय भूमिका निभाई है, हालांकि शिक्षा की गुणवत्ता और परिणामों के क्षेत्र में सुधार की आवश्यकता अब भी बनी हुई है।

आर्थिक मार्च पर भारत की प्रतिव्यक्ति सकल राष्ट्रीय आय 1990 के 2162.22 डॉलर से बढ़कर 2023 में 9096.76 डॉलर हो गई, जो चार गुना से भी अधिक की वृद्धि है। इस विकास का क्षेत्र, व्यापक आर्थिक सुधारों के साथ–साथ मनरेगा, जन–धन योजना और डिजीटल समावेश जैसी सामाजिक योजनाओं को भी जाता है। विशेष रूप से 2015–16 से 2019–21 के बीच साढ़े 13 करोड़ लोग बहुआगामी निर्धनता से बाहर निकलें है, जो एक बड़ी उपलब्धि मानी जा रही है।

eISSN 3139-2377
RESEARCH WORK
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed International Research Journal
Volume 02, Issue 03, March 2026

भारत में मानव विकास की प्रमुख चुनौतियां:– गहरी असमानता (30.0% HDI में कमी) निम्न गुणवत्ता वाली शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधओं का असमान वितरण, कुपोषण, लैगिक एवं जातिगत रूढ़ियाँ और 88% श्रमशक्ति के लिए सामाजिक सुरक्षा का अभाव है। इन बाधाओं के कारण आर्थिक प्रगति के बावजूद समावेशी विकास सुनिश्चित नहीं हो पा रहा है प्रमुख चुनौतियां निम्न हैः–

- **आय एवं सम्पत्ति में समानता**: आर्थिक विकास का लाभ समान रूप से वितरित नहीं है। देश के शीर्ष 10% लोगों के पास 77% में अधिक सम्पत्ति है, जिससे गरीबी का दुष्चक्र बना हुआ है।
- **शिक्षा की निम्न गुणवत्ता और बुनियादी ढांचा**:– यद्यपि स्कूल नामांकन बढ़ा है, लेकिन स्कूलों में प्रशिक्षित शिक्षकों और शौचालय पेयजल जैसी बुनियादी सुविधाओं का अभाव है, जिससे सीखने के परिणाम निम्न हैं।
- **स्वास्थ्य देखभाल में असमानाः–** ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच स्वास्थ्य सेवाओं में बड़ा अन्तर है। साथ ही सार्वजनिक स्वास्थ्य पर कम खर्च GDP का <1%) एक बड़ी बाधा है।
- **कुपोषणः–** बच्चों में व्यापक कुपोषण और अल्पोषण स्वास्थ्य और संज्ञानात्मक विकास को प्रभावित कर रहा है जो भारत के लिए एक गम्भीर मुद्दा है।
- **लौगिंक असमानताः–** महिलाओं की श्रम बल भागीदारी कम है और उन पर सामाजिक रूढ़ियो का प्रभाव बना हुआ है, जिससे वे विकास में समान भागीदार नहीं बना पा रही हैं।
- **बेरोजगारी और अनौपचारिक क्षेत्रः–** लगभग 88% श्रमिक बिना किसी अनुबन्ध या सामाजिक सुरक्षा के काम कर रहे हैं जो उन्हें आर्थिक रूप से असुरक्षित बनाता है।
- **क्षेत्रीय असमानताः–** भारत के विभिन्न राज्यों के बीच मानव विकास सूचकांक (HDI) में भारी अंतर है।

इन चुनौतियों से निपटने के लिए समावेशी विकास, स्वास्थ्य शिक्षा में बेहतर निवेश और प्रभावी शासन की आवश्यकता है।

निष्कर्ष:– भारत ने मानव विकास में सराहनीय प्रगति की हैं, लेकिन अभी भी कई महत्वपूर्ण चुनौतियां मौजूद है। स्वास्थ्य, शिक्षा और समान जीवन स्तर को प्राथमिकता देते हुए समग्र और समावेशी दृष्टिकोण अपना कर भारत सतत् मानव विकास प्राप्त कर विकसित भारत @ 2047 के लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। विकसित भारत की यह यात्रा बहुआगामी है। यह मुख्य रूप से अपने निम्न जीवन स्तर और प्रतिव्यक्ति आय असमानता के कारण HDI रैंक में पिछड़ा हुआ है, जिसे शिक्षा एवं स्वास्थ्य क्षेत्र में सरकारी व्यय को बढ़ाकर सुधारा जा सकता है। इसके लिए आर्थिक विकास, सामाजिक समावेश, पर्यावरण संरक्षण और दूरदर्शी नेतृत्व के बीच एक संतुलन की आवश्यकता है। दृढ़ संकल्प रणनीतिक योजना और सामूहिक प्रयासो से हम अपने देश को प्रगति के एक प्रकाश स्तम्भ में परिवर्तित कर विकसित भारत @ 2047 के लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं।

eISSN 3139-2377
RESEARCH WORK
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed International Research Journal
Volume 02, Issue 03, March 2026

संदर्भ सूची:–

1- Prabhu K.S. (1992), Regional Dimensions of Human Development in India. Uni of Bomby, Bomby.

2– सांखला, डायालाल (2021) मानव विकास के विविध आयाम, (IJEMMASSS) Vol-03 (अप्रैल–जून) PP-166-170

3- India Homan Development Report, 2025.

4– कुमार प्रभास (2024) विकसित भारत 2047 प्रमुख चुनौतियां RJPP (अप्रैल–सितम्बर) Vol-XXII No. II PP, 172-176.

5– सिंह विमलेश (2025), विकसित भारत व 2047 लक्ष्य प्राप्ति में एक प्रगतिशील एवं समावेशी शिक्षा प्रणाली की अनिवार्यता, शोध पत्रिका (जनवरी–मार्च) Vol-13 PP 57-64

6– चटर्जी, एस (2024) भारत में समावेशी विकासः समृद्धि को प्रेरित करना और अभावों को समाप्त करना, रूटलेज।

7– विजय कुमार, एन. (2025) भारत में मानव विकास सूचकांक पर एक अध्ययन, अर्न्तराष्ट्रीय बहुविषयक अनुसंधान पत्रिका, 7 (2)

8– भूटानी कुमार आशीष (2025), सहकारिता से होगा विकसित भारत व 2047 का स्वान साकार, कुरूक्षेत्र, जुलाई, 2025, PP 5-10.

9– संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP), (2024) मानव विकास रिपोर्ट 2024: एक असमान दुनिया में समानता, UNDP.

10– संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) (2025) मानव विकास रिपोर्ट 2025: बदलते विश्व में मानव विकास को आगे बढ़ाना, UNDP.

11– आर्थिक समीक्षा 2011–12, मानव विकास अध्याय 13 https://indiabudget.nic.in

12– Ideas hor the vision viksit Bharat 2047, 11 Dec 2023 https://innovativeindia-mygov.in

13& Viksit Bharat 2047, 11 Dec 2023, https://iipe.ac.in

14& Viksit Bharat: A Deep Drive into India's Economic Transformation 15 August 2024, https://www.jagramjosh.com